नैतिकता एवं संगीत शिक्षा

नीति गुप्ता
शोध छात्रा, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश शिमला

शिक्षा समाज का दर्पण है। समाज को देखकर ही शिक्षण प्रणाली का अनुमान लगाया जा सकता है। शिक्षा मानव की सर्वांगीण उन्नति का ऐसा आधार है जो उसके व्यक्तित्व के विकास का कारण बनती है। यह व्यक्तित्व ही मानव (बालक) के अपने लिए तथा साथ ही साथ समाज के लिए संस्कृति व देश के लिए और अन्ततः सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विश्व के लिए हितकारी सिद्ध होता है।

भारत में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। छात्रों में अनुशासनहीनता, अध्यापकों में अपने उत्तरदायित्वों के प्रति गैर गम्भीरता आगे चलकर बेरोजगारी और ऐसी ही अनेक समस्याएं भारतीय शिक्षा जगत में व्याप्त हैं एवं होंगी। यह बात सैंकड़ों बार लिखी और हजारों बार दोहराई जा चुकी है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमें अंग्रेजों से विरासत में मिली थी और अंग्रेजों ने इस शिक्षण प्रणाली का ढांचा यह उद्देश्य सामने रखकर खड़ा किया था कि उन्हें अपना राजकाज चलाने के लिए सस्ते मूल्य पर देसी क्लर्क और बाबू मिल जाएं। अंग्रेज तो चले गए परन्तु वह शिक्षा पद्धति ज्यों की त्यों कायम है।

आधुनिक शिक्षा में सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें ऐसे स्पष्ट लक्ष्य तथा कार्यक्रमों का अभाव है जिन से नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा का विकास सम्भव हो नई पीढ़ी में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, आदर्शों का अभाव तथा नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के ह्रास के कारण संसार के कई देश चिन्तातुर हैं– भारत भी उन में सम्मिलित है।

प्राचीन समय से ही बच्चे के नैतिक विकास को शिक्षा का अविच्छिन्न अंग माना जाता है। क्योंकि नैतिक विकास के बिना मनुष्य, मनुष्य का शोषण करेगा तथा उन्हें मानव न समझ कर पशुओं, वस्तुओं अथवा सम्पति की भांति प्रयोग में लाएगा। ऐसी स्थिति में मानव व पशु में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा बल्कि नैतिक पक्ष के बिना अन्य पक्षों की दृष्टि से पढ़ा लिखा आदमी पशुओं से भी बदतर होगा।[1] मानव के जीवन की आधारभूत कड़ी नैतिक मूल्यों में निहित है। व्यक्तित्व और समाज का अस्तित्व एवं प्रगति नैतिकता पर ही निर्भय है। यही हमारे भीतर संघर्ष और संहार की भावनाओं और प्रवृतियों को दबाकर परोपकार, शान्ति, सुख और सामंजस्य को प्रोत्साहित करती है। [2]

राष्ट्र के विकास में नैतिकता एक बीज मन्त्र है। अनैतिक व्यक्ति राष्ट्र को पतन की ओर ले जाते हैं। नैतिक व्यक्ति राष्ट्र का उत्थान करते हैं। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में नैतिक गुणों को विकसित किया जा सकता है। "हरबर्ट के अनुसार – शिक्षा का एक मात्र कार्य है नैतिकता। नैतिक आधार पर खड़ा राष्ट्र कभी भी निर्बल नहीं होता।[3]

नैतिकता

जीवन में नैतिकता का बड़ा भारी महत्व है। नैतिकता मानव का एक विलक्षण गुण है। नैतिकता के अभाव में जीवन का उतना ही महत्व है– जितना समाज में अनपयोगी पशु जीवन का । विश्व के चेतना– सम्पन्न जीवों में केवल मानव ही ऐसा जीव है जिसे नैतिकता का बोध और अनुभव है। पशु जगत में नैतिक चेतना का पूर्णतया अभाव दृष्टिगोचर होता है क्योंकि उनमें शुभ और अशुभ को परखने की विवेक बुद्धि नहीं होती। नैतिकता शब्द संस्कृत के 'नीति' से व्युत्पन्न माना जाता है। नीति संस्कृत का शब्द है जो 'नी' धातु से बना है। 'नी' धातु का अर्थ है – ले जाना, नेतृत्व करना, पहुंचाना आदि।[4] 'नीति' हमें बतलाती है..... यह करो, यह न करो, ऐसे चलो, ऐसे न चलो, ऐसे न बैठो, ऐसे कहो, ऐसे न कहो, इसी प्रकार का विधान नैतिक रूप में हमारे सामने आता है। प्राकृतिक रूप में मनुष्य अनैतिक ही होता है। नैतिक नियमों द्वारा उसका संस्कार होता है। इस संस्कार के बाद ही वह सुसंस्कृत बनता है। नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराना, शुभाशुभ का, कर्तव्याकर्तव्य का, साधू असाधू का भेद समझना ही 'नीति' कहा जाता है।[5]

नीति से नैतिक शब्द बना है। 'नैतिक' शब्द का अर्थ आचरण से सम्बन्धित है। समाज, धर्म और राष्ट्र द्वारा निर्मित नियमों के अनुकूल चलते रहना ही नीति है और इन नियमों के अनुकूल मनोवृतियों से सम्बन्धित मूल्य ही नैतिक मूल्य हैं।

नैतिक शिक्षा चरित्र और व्यक्ति के निमार्ण की वह प्रक्रिया है–जो पशु जीवन और मानव जीवन के बीच एक विभाजन रेखा खींचती है। नैतिक शिक्षा तो मानवीय सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला है। 'जिस देश के व्यक्ति के पास नैतिक मूल्य नहीं है, उस समाज में असमानता, विद्वेष, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध, मुक्तभोग तथा युद्ध की विभाषिकाएं होंगी न कि प्रेम, शान्ति करूणा, त्याग की उदात्त भावनाएं । वह देश अधिक दिन तक अपने मूल्य स्थापित नहीं कर सकता है और न ही किसी के लिए प्रेरक ही अपितु वह स्वयं अन्ध–कूप में गिर जाएगा।[6]

भारतीय विद्वानों ने सदा ही नीति को अनिवार्य तत्व स्वीकारा आचार्यों ने सम्पदा से भी अधिक महत्व नैतिकता को दिया है । कहा भी गया है:–

'वृतं यत्नेन संरक्षेत्'।

मानव जीवन के लिए चारित्रिक संचय को ही श्रेष्ठ माना गया है, सम्पदा के नष्ट होने पर पुनः प्राप्ति की सम्भावनाएं बनी रहती हैं किन्तु चरित्र हत्या अथवा नैतिक पतन के हो जाने पर अस्तित्व ही नष्ट हो जाता है–उसे पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है।[7]

'नैतिकता का तात्पर्य उन नैतिक सिद्धान्तों से है जो अच्छा जीवन बिताने के लिए आवश्यक है।[8] डा. राधाकृष्णन के अनुसार तो नैतिकता का ज्ञान ही वास्तिविक शिक्षा है। शिक्षा का व्यावसायिकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह एक मध्यम स्तर की शिक्षा से भी सम्भव है किन्तु नैतिक शिक्षा तो मानवीय सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला है अतः आचरण के लिए समाज द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार चलना नैतिकता कही जा सकती है।[9]

नैतिकता' द्वारा मनुष्य के समस्त सदगुणों का बोध होता है। न्याय, संयम, सहनशीलता, परोपकार, उदारता, ईमानदारी, जीव मात्र के प्रति करूणा, दूसरों के लिए अपने हित का परित्याग करने की इच्छा, कर्तव्यनिष्ठा आदि समस्त मानवीय सदगुण नैतिकता के अंतर्गत आते हैं:– अर्थात् सभी सदगुणों का सामूहिक नाम ही नैतिकता है।[10]

प्रत्येक देश, काल और राज्य एवं व्यक्ति दर व्यक्ति नैतिकता की परिभाषा बदल जाती है। पशुता से मानवता की ओर अग्रसर होने वाला मार्ग ही नैतिकता है। नैतिकता का सम्बन्ध मनुष्य की अंन्तरात्मा से है। इसलिए नैतिकता का अर्थ है, हृदय की पवित्रता। जिसका हृदय पवित्र नहीं होता, वह नैतिक नहीं हो सकता। इसका अर्थ यह नहीं कि बौद्धिक ज्ञान का नैतिकता में स्थान नहीं है, लेकिन बौद्धिकता के साथ–साथ जिसके हृदय में दूसरों के प्रति सहानुभूति, मैत्री, दूसरों के विकास के प्रति सदभावना, करूणा, सहिष्णुता, और संयम है वही पवित्र और नैतिक है।[11]

'नैतिकता' जो 'नीति' शब्द से बना है, जिसकी शाब्दिक परिभाषा होगी 'व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे'।[12] नैतिकता का उद्देश्य मेरा सुख, मेरा लाभ अथवा मेरा हित नहीं, अपितु सामान्य शुभ या सामाजिक कल्याण है। संक्षेप में नैतिकता का मूल दृष्टिकोण स्वार्थमूलक न होकर परार्थमूलक ही है।[13] वर्तमान परिवेश में सम्पूर्ण मानव समाज में जिस गति से नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, उसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण समाज का संगठनात्मक स्वरूप धीरे–धीरे छिन्न–भिन्न हो रहा है। भौतिक प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रत्येक व्यक्ति अंहम की तुष्टि के लिए परार्थ की भावना को त्याग कर निज स्वार्थ के चक्कर में सिमटता चला जा रहा है। यही कारण है कि मानवीय चिन्तन को वह धरातल नहीं मिल पा रहा है जिसमें मानवता का उपेक्षित विकास हो सके। मानवीय मूल्यों के सहज स्वरूप को धारण न करने के कारण उसमें तामसिक वृतियाँ विशेष रूप से बलवती हो रही हैं, वह अपने आडम्बरों के ताने बाने में स्वयं कैद हो रहा है। ऐसी स्थिति में मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के लिए तथा जन मानस में सुख शान्ति की वृद्धि के लिए उन आदर्शों, सिद्धान्तों की ओर लोगों को प्रेरित किया जाए, जिनका सम्बन्ध यथार्थ से हो और जो व्यक्ति एवं समाज में समन्वय, आत्मीकरण, सहयोग, सामन्जस्य एवं सन्तुलन स्थापित करता हो।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की तुलना प्राचीन काल में प्रचलित गुरूकुल पद्धति से करते हैं तो उसमें जमीन आसमान का अन्तर दिखाई देता है। प्राचीन काल में छात्र गुरूकुल से जहां सम्पूर्ण विकसित और प्रखरता सम्पन्न व्यक्तित्व लेकर निकलते थे, वहीं आज के शिक्षण संस्थानों से संस्कारों के नाम पर उनकी स्थिति शून्यवत ही रहती है। समाज का जो विकृत स्वरूप आज हमारे सामने है, इसके लिए किसी एक को दोषी नहीं ठहरा सकते। आज की युवा पीढ़ी को यदि बचपन से परोपकार, दया, त्याग और देशप्रेम की शिक्षा दी जाती तो उनको वैसा ही कार्य करने की सूझती। पौधा कोई भी क्यों न हो, उसे उपयुक्त भूमि व जल की आवश्यकता होती है।

हमारे प्राचीन साहित्य में 14 विद्यायों और 64 कलाओं का जिक्र जगह–जगह पाया जाता है। इन विद्याओं और कलाओं में जीवन की अनेक आवश्यक और सुसभ्य तथा सुसंस्कृत बनाने की बातों का समावेश हो जाता है। अस्त्र–शस्त्र, संचालन, संगीत, वैद्यक, ज्योतिष, मूर्ति बनाना, चित्रकारी आदि कितने ही विषयों में उस समय के भारतवासियों ने अपूर्व उन्नति की थी।

अच्छी शिक्षा का ही परिणाम था कि प्राचीन समय में मेधावी, तेजस्वी, मनस्वी और यशस्वी छात्र हमारे देश में होते थे। गौतम, व्यास, पतंजलि, करणादि, वशिष्ठ, जैमिनी जैसे विश्व गुरू भी तो हमारे देश में हुए थे जिनके ज्ञान का आज विश्व ऋणी है। वर्तमान में जो शिक्षा दी जाती है, वह हमें पूर्ण विकास के मार्ग पर न ले जाकर अंहकारी, प्रमादी और मर्यादा से च्युत करने में सहायक बन रही है। आज के विद्यार्थी वास्तविक विद्या के अर्थी न होकर केवल सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाले हैं।

अनेक लोगों का ख्याल है कि देश के शिक्षित युवक और युवतियों में नैतिकता और नियन्त्रण का अभाव दिखलाई पड़ रहा है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है, वह ज्ञान जो व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक समस्या का स्वरूप और समाधान बना सकने में समर्थ हो।

वर्तमान शिक्षा एकांगी है। वास्तविक शिक्षा वह है जिससे मनुष्य अभ्युदय (आनन्द, उन्नति) और निःश्रेयस (मोक्ष) दोनों पथ का पथिक बन सके, जिससे मनुष्य का तन सबल, मन स्वच्छ हो, वह छल प्रपंच से रहित, परोपकारी, बुद्धिमान तथा एक सुयोग्य नागरिक बने वही सच्ची शिक्षा कही जा सकती है। मानव जीवन के उत्थान में वही शिक्षा समर्थ है, जो उसके विवेक, पुरूषार्थ, नैतिकता, सेवा, कृतज्ञातादि भावनाओं को विकसित करे। अच्छी शिक्षा का आदर्श हमें नीति निपुण सर्व आत्मभावना दायक विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति दया, सेवा, भलाई, अपनत्व आदि गुण स्वभाव संस्कार वाले बनाना है। संगीत इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सामाजिक प्राणियों में नैतिकता की भावना संगीतकला के विकास से ही उत्पन्न होती है।

आज हमारी भाषा, विचार, चिन्तन, संस्कार सभी कुछ आयातित हो रहे हैं। विकास की अन्धी दौड़ में हम अपनी जड़ों से कट गए हैं। आर्थिक मूल्यों ने आध्यात्मिक मूल्यों को पीछे धकेल दिया है। हमें अपने देश की कला व संस्कृति की रक्षा में प्राणपण से जुटना पड़ेगा। युवा पीढ़ी को पुनः संस्कारित करना होगा। संगीत शिक्षण द्वारा हम युवा वर्ग में अनुशासन, नम्रता, शान्ति, एकाग्रता, आदर, भावानुभूति, आनन्दभाव, नैतिकता आदि उदात भावनाओं को पुनः प्रस्फुटित व पल्लवित कर सकते हैं। संगीत शब्द से हमारा तात्पर्य उस संगीत से है जो हमें बुजुर्गों द्वारा परम्परा से प्रप्त हुआ हैं और जो हमारी स्वर्णिम विरासत है। न कि उस संगीत से जो आज उत्तेजनापूर्ण ढंग से लोक रन्जन कर धन अर्जित कर रहा है।

संगीत एक राष्ट्र की संस्कृति का सर्वप्रमुख अंग है। वह राष्ट्र की ऐसी निधि है जो अपनी समृद्धि के कारण राष्ट्रगौरव को न केवल वर्तमान में ही अपितु भविष्य में भी निरन्तर प्रकाशित करती रहती है। यह मानव के अन्तःस्थल में मानवता की भावना को परिपलावित करके सही रूप में इसका

पाठ पढ़ाता है। वात्स्यायन ने कामसूत्र में लिखा है कि नागरिक को सुसंस्कृत कहलाने के लिए संगीत का ज्ञान आवष्यक है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जो हमारी नई पीढ़ी तैयार हुई है, वह अपनी योग्यता एवं क्षमता के बल पर तकनीकी शिक्षा के माध्यम से विज्ञान और प्राद्योगिकी की महतम उँचाईयों को छू रही है। लेकिन इस नई पीढ़ी में उन नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की कमी दिखती है। जो हमारी चिरन्तन परम्पराएँ हैं तथा जिनका हस्तांतरण हमारे बुजुर्गों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी होता चला आया है। आज हमारी युवा पीढ़ी कहीं अवसाद से ग्रसित है तो कहीं नशे की गिरफ्त में दम तोड़ती दिखती है, तो कहीं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर अपने नैतिक एवं उच्च जीवन आदर्शों की उपेक्षा करती मिलती है। ऐसे वातावरण में नई पीढ़ी में मूल्यों के पुर्नजागरण के लिए संगीत शिक्षा एक सशक्त माध्यम बन सकती है। क्योंकि संगीत हमारी गौरवपूर्ण संस्कृति का अभिन्न अंग होने के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव शरीर, मस्तिष्क एवं वृतियों को शिक्षित और अनुशासित करता है। संगीत में मनुष्य के संस्कार, आचरणगत, परम्पराएं, धार्मिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, बौद्धिक विकास आदि सभी विद्यमान रहते हैं।

पूर्व राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन ने कहा था कि 'भारत सहित सारी दुनिया की परेशानी का कारण यह है कि शिक्षा नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का अर्जन नहीं, बल्कि मात्र बौद्धिक क्रिया बन गई है।

संगीत एक विशिष्ट शिक्षा पद्धति है, जिसमें ज्ञान और अनुभव तो मिलता ही है साथ ही हमारी चेतनाशक्ति भी उद्दीप्त हो जाती है। संगीत ने जहां विभिन्न माध्यमों से समाज को शिक्षित किया है, वहीं समयानुसार उसकी शिक्षा के अध्ययन की रूपरेखा भी राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकतानुसार परिवर्तित हुई है।

मानव जीवन के हर क्षेत्र में संगीत का अपना उपयोग एवं महत्व है। संगीत के बिना मानव जीवन अधूरा है। क्योंकि ये मानव की सर्वांगीण प्रगति में विशेष रूप में सहायक है। संगीत शिक्षण प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है और रहा है। कहा जाता है कि प्राचीन समय में तो शिक्षा एवं दैनिक क्रम का प्रारम्भ संगीत द्वारा ही किया जाता था क्योंकि वैदिक काल में यज्ञ के लिए 'सामगान' अनिवार्य था।

संगीत स्वयं में एक शिक्षा पद्धति है। और यदि इस शिक्षा पद्धति के माध्यम से बालकों का शिक्षण–प्रशिक्षण करें तो बालकों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। संगीत एक कसरत भी है जिससे हमारा शरीर और मन दोनों प्रसन्न रह सकते हैं। गायन, वादन तथा नृत्य उत्कृष्ट कोटि के शारीरिक व्यायाम माने गए हैं। संगीत व्यक्ति को प्रत्येक स्थिति में संतुलित रखता है। संगीत के माध्यम से अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा सम्भव है। संगीत के माध्यम से प्राचीन संस्कृति व सभ्यता का ज्ञान आने वाली पीढ़ी को उपलब्ध होता है व भविष्य में निर्मित होने वाले संगीत का प्रेरणास्त्रोत बनता है। संगीत ही एकमात्र ऐसा साधन है, जो समाज में मानव को मानव के समीप लाने में सक्षम रहा है।

संगीत आधारभूत ज्ञान है, विश्व का जितना भी ज्ञान है, प्रत्येक के साथ संगीत का सम्बन्ध है। संगीत सम्पूर्ण जगत को प्रभावित करता है। संगीत सीधा हृदय को स्पर्श करता है। लेखनी वाणी की इतनी सीधी पहुंच भाव केन्द्र तक नहीं जितनी कि संगीत की है। मस्तिष्क को प्रभावित करना हो तो तर्क और तथ्यों का सहारा लेना पड़ेगा पर भावनाओं को आंदोलित करना एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसमें संगीत से अधिक और कोई प्रभावशाली माध्यम नहीं है।

Music education fosters aesthetic sensibilities for truth, goodness and beauty, without which no education is complete.[14]

प्रसिद्ध विद्वान उमेश जोशी संगीत कला को अत्यन्त उच्च कोटि की कला स्वीकारते हुए कहते हैं:– 'भारतीय संगीत की यही तो सबसे बड़ी विशेशता रही है कि बाह्य एवं अन्तर दोनों प्रकार के सौंदर्य समानान्तर रूप से विकसित होते रहें। मनोरंजन के क्षेत्र में भारतीय संगीत कभी पीछे नहीं रहा किन्तु वह मनोरंजन ऐसा होता था कि जिससे मानव का नैतिक स्तर न गिरने पाता था, बल्कि उसका नैतिक विकास, सास्कृतिक विकास और साहित्यिक विकास भी हो जाता था। यह विशेषता हमें संगीत में ही मिलती है, अन्य में नहीं।[15]

यूनानी सभ्यता में संगीत के महत्व को स्वीकारा गया है। यूनानी सभ्यता में संगीत के महत्व का वर्णन करते हुए 'हबर्ट ए पोपले' कहते हैं, "The ancient Greeks are said to have made a point of teaching their children music, because they believed that it made them more unselfish and helped them to see better the beauty of order and the usefulness of the rules"[16]

कैप्टन एन. अगस्टस विलार्ड ने अपनी पुस्तक ' ट्रीटाइज़ ऑन द म्यूज़िक ऑफ इंडिया में उल्लेख किया है कि अकार्डिया (सम्भवतः दक्षिणी ग्रीस का एक नगर) में प्रत्येक नागरिक को कानूनन संगीत सीखना अनिवार्य कर दिया था ताकि वे अपने क्रूरतापूर्ण व्यवहार को सुकोमल बना सकें।[17]

संगीत ने जीवन में सदैव उच्च आदर्श का दृष्टिकोण रख कर जीवन के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। मानवता, प्रेम, आपसी सदभाव को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह मनुष्य को प्यार, सहानुभूति, सहनशीलता, क्षमा आदि सदगुण सिखाता है। इस तरह संगीत विषय विश्व बन्धुत्व व एकता की भावना स्थापित करता है। संगीत का महत्व हमारे जीवन में तब और अधिक बढ़ जाता है जब वह मनुष्य में नैतिकता, अनुशासन, प्रेम, दया, सौहार्द की भावना पैदा करता है। प्लेटों ने कहा है:– संगीत से व्यक्ति में धर्म की प्रवृति आ जाती है, वह व्यक्ति कभी भी अन्याय नहीं कर सकता जो कि संगीत की मधुर स्वर लहरियों में बंधा होता है। संगीत चरित्र को ढालता है।[18] संगीत के द्वारा विद्यार्थी को नैतिकता और अनुशासन का पाठ सुगमता से पढ़ाया जा सकता है।

वर्तमान परिस्थितियों में अध्यापकों और अभिभावकों दोनों को ही ये शिकायत है कि आज विद्यार्थियों में नैतिकता और अनुशासन का ह्रास होता जा रहा है। संगीत शिक्षा इस दिशा में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है।

संगीत शिक्षा में जहां मन की एकाग्रता, चरित्र निमार्ण, शशारीरिक विकास, अनुशासन पालन की प्रेरणा एवं मन की दुर्बलताओं का अन्त इत्यादि गुणों का संयम है, साथ ही इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह मनुष्य को उसकी सभ्यता और संस्कृति से भी परिचित करवाने में सहायक है। संगीत मात्र मनोरंजन का एक साधन नहीं है अपितु उद्देश्यपूर्ण कला है।

संगीत की शिक्षा विद्यार्थियों में नैतिकता का बीजारोपण कर उसे सिंचित करती है तथा हमारी सनातन संस्कृति के विभिन्न आयामों से रू–ब–रू कराती है। साथ ही विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति व सृजनशीलता के गुणों का विकास करती है। संगीत विद्यार्थियों के मस्तिष्क को एकाग्र कर उसे स्वयं के प्रति तथा समाज के प्रति भी संवेदनशील बनाता है। भावनात्मक विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास में भी संगीत अहम भूमिका निभाता है।19

नैतिक मूल्यों की शिक्षा बालक जन्म से ही प्राप्त करता है। सर्वप्रथम बच्चा अपने परिवार के सम्पर्क में आता है जहाँ उसको पारिवारिक संस्कार प्रभावित करते हैं। यदि घर में प्रातः काल उसे 'श्री राम चन्द्र कृपालु भज मन' की धुन सुनने को मिलेगी तो उसमें ईश्वरोपासना का भाव जागृत होगा, विपरीत परिस्थिति में यदि उसे ' जवान जाने मन हसीन दिलरूबा' सुनने को मिलेगा तो उसका भविष्य निश्चित रूप से विध्वंसक होगा। इसी प्रकार सामाजिक परिवेश में जैसा वातावरण उसे मिलेगा, उसी आधार पर वह अपने मूल्यों का निर्धारण करेगा।[20]

संगीत जैसी मूल्यपरक शिक्षा अन्य किसी भी विषय के शैक्षिक परिवेश में मिलना कठिन है, क्योंकि शास्त्रीय संगीत विश्व की भाषा है। जाति, धर्म, वर्ण , ऊँच नींच की भावना से परे यह विश्व बन्धुत्व एवं मानव कल्याण के लिए एक प्रभावशाली माध्यम है। सृष्टि के आदिकाल से ही संगीत और मानव मन में गहरा तादात्मय रहा है। ईश्वर और उसके विराट स्वरूप प्रकृति द्वारा मनुष्य को प्रदत्त एक विशिष्ट उपहार संगीत है। आनन्द की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति संगीत का शाश्वत स्वरूप है।[21]

हमारी संस्कृति तथा समाज के साथ साथ हमारे संगीत में भी उत्तरोत्तर विकास हुआ है तथा इसने मानव जीवन को महतम उंचाइयों तक पहुंचाकर उच्च आदर्शों वाले नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की है। आज के तनावपूर्ण वातावरण से छुटकारा पाने के लिए संगीत शिक्षा अति महत्वपूर्ण है।

संगीत अपने पूर्ण रूप में समृद्ध जीवन का पर्याय है। जीवन ग्रन्थों के पृष्ठों का कोई भी अध्याय ऐसा नहीं मिलता है जिसे संगीत से शून्य कर दिया जाए। संगीत मानव जीवन में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है, चाहे वह कोई मांगलिक कार्य हो अथवा मृत्यु जैसी शोक स्थिति। जीवन का कोई भी कार्य इसके बिना अधूरा ही है। सृष्टि के स्वर्णिम विधान से लेकर प्रलय की काली संध्या तक संगीत का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है।

इस प्रकार संगीत के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, भावात्मक, नैतिक व आध्यात्मिक महत्व को समझते हुए तथा संगीत के माध्यम से नई पीढ़ी में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के हस्तांतरण एवं

पुर्नजागरण में संगीत की विद्यालयीन शिक्षा का महत्व समझा गया तथा साथ ही प्राइमरी स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक इसे एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्वीकार किया गया। परन्तु खेद का विषय है कि अधिकतर संगीत की शिक्षा कालेज स्तर पर प्रारम्भ होती है। बहुत कम विद्यालयों में एक विषय के रूप में यह प्राइमरी स्तर से पढ़ाया जाता है।

यदि राष्ट्र के कल्याण के लिए संगीत विद्या का समूचित उपयोग किया जाए तथा सम्पूर्ण भारत में संगीत को भी गणित, हिन्दी विषय के समान ही महत्वपूर्ण विषय के रूप में पढ़ाया जाए तो उससे न केवल राष्ट्र के वैभवशक्ति, सर्वसांस्कृतिक मूल्य की ही वृद्धि होगी अपितु सत्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ सर्व आदर्श नागरिक उपलब्ध हो सकेंगे, जो राष्ट्र की सबसे अमूल्य सम्पत्ति है। नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति युवा पीढ़ी को संगीत शिक्षा के माध्यम से जागरूक बनाना है ताकि इस स्वर्णिम विरासत को संरक्षण प्राप्त हो साथ ही युवा पीढ़ी के उज्जवल भविष्य का निर्माण हो सके ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिक्षा तथा मानव मूल्य – डा. बी. एस. डागर, पृ. – 39
2. महात्मा गांधी का दर्शन – धीरेन्द्र मोहन दत्त, पृ. – 58
3. सूर्या गाइड (बी. एड) चैपसवेवचील पृ. – 26
4. प्रमुख उपनिशदों में आचारतत्व–मोमांसा–गोविन्द राम बडोनी शोध प्रबन्ध सितम्बर 199. (पी.यू.चण्डीगढ) पृ.–62–63
5. हिन्दी प्रबन्ध काव्यों में नैतिक मूल्य – डा. सीतासैणी पृ. – 16
6. प्रसाद– साहित्य में आदर्शवाद एवं नैतिक दशर्न – आचार्य उमेश शास्त्री, पृ.–399
7. वही पृ.– 396
8. आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं – डा. जे. एस. वालिया पृ. 448
9. हिन्दी प्रबन्ध काव्यों में नैतिक मूल्य :– डा. सीता सैणी , पृ. 15
10. नीति शास्त्र के मूल सिद्वान्त :– डा. वेद प्रकाश शर्मा पृ. 326
11. नैतिक पाठमाला :– नथमल मुनि, (प्रस्तावना)
12. चिन्तन के सोपान :– रतिलाल शाहीन, पृ. 93
13. नीति शास्त्र के मूल सिद्धान्तः– डा. वेद प्रकाश शर्मा, पृ. 327
14. भारतीय संस्कृति के उत्थान में संगीत का योगदानः– विनोद कुमार ;चैण्कण् जीमेपेद्ध भ्न् 2010 पृ. 63–64
15. भारतीय संगीत का इतिहासः– उमेश जोशी पृ. 440
16. द म्यूज़िक ऑफ इंडियाः– हर्बट ए पोपले पृ. 13
17. राष्ट्रीय हित में संगीत की उपादेयता :– राधेश्याम जायसवाल (सं. क. वि.) नवम्बर 1974
18. भारतीय संगीत की परम्परा – वंशानुक्रम एवं वातावरण – श्री हरिकिशन गोस्वामी, पृ. 7
19. संगीत के माध्यम से नई पीढ़ी में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पुर्नजागरण–श्री अमित कुमार वर्मा (सं.क.वि.) अप्रैल 2008
20. संगीत एक मूल्यपरक शिक्षा – डा. बृजरानी शर्मा (छायानट) अप्रैल – जून 2002
21. संगीत एक मूल्यपरक शिक्षा – डा. बृजरानी शर्मा (छायानट) अप्रैल – जून 2002